हिन्दी का प्रचार सोशल मीडिया के साथ

श्रीललिता

सहायक प्राध्यापक, आर.जे.एस. फर्स्ट ग्रेड कॉलेज

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18784159

ABSTRACT:

हिन्दी भारत की राजभाषा है और भारतवर्ष के हिन्दी पढ़ने-लिखने और बोलने वाले ७०% लोग भी इस बात से अनभिज्ञ हैं। जिस देश को आजाद हुए ७९ साल से ऊपर हो गए, उस देश को आजादी के नाम पर एक राष्ट्रभाषा आज तक नहीं मिली। राजभाषा के रूप में लगातार हम हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। हिन्दी के समाचार पत्र, हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ, हिन्दी के न्यूज़ चैनल तथा हिन्दी भाषा पर आधारित तमाम चैनल हिन्दी के प्रचार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन आज की यह हकीकत है कि पुस्तकालयों में पाठक संख्या दिनों-दिन कम होती जा रही है। वहाँ पर सिर्फ अब वही नजर आ रहा है जो शिक्षण से जुड़े हैं, जिनके पास मोबाइल नहीं है, जिन्हें वहां पर बैठकर अध्ययन करना है और उसी अध्ययन के आधार पर अपनी जिंदगी की गाड़ी को रफ़्तार देनी है।

सोशल मीडिया हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है, जो युवाओं और आम जनता को अपनी बात कहने, संस्कृति साझा करने और वैश्विक स्तर पर भाषा को बढ़ावा देने का मंच देता है, जिससे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है और यह भाषा घर-घर तक पहुंच रही है, भले ही 'अंग्रेजी' का चलन हो।

KEYWORDS:

राजभाषा, फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप, प्लेटफॉर्म्स।

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य के नाम पर कहीं बहुत उम्मीद लेखक के दर्शन के लिए, तो कहीं साहित्यकार साहित्य के नाम पर कूड़ा-कचरा भी देखने को मिला है। हिन्दी साहित्य में कुछ हो रहा है, हिन्दी साहित्य का लेखन कितना विकास कर रहा है, हिन्दी साहित्य के लोग क्या सोचते हैं, हिन्दी की सभी विधाओं में क्या मिल जाता है; इसी कारण गोष्ठियों में जाना होने लगा। गोष्ठी कब होती है, जानकारी मिलने लगी।

व्हाट्सएप समूह और फेसबुक समूह जिस कार्य के लिए होने चाहिए, वह कम होता है और जिस कार्य के लिए प्रयुक्त नहीं होने चाहिए, वह ज्यादा होता है। हिन्दी साहित्य को प्रचार मिलकर कुछ तय किया, जिसके तहत बहुत सारे प्रयास अभी भी जारी हैं। पर जब दक्षिण भारत के लेखक हिन्दी की जगह अपनी स्थानीय भाषा में कुछ पोस्ट करते हैं, तो स्थिति असहज हो जाती है। वे ऐसा क्यों करते हैं, यह तो वे ही जानें। क्योंकि उनकी वह भाषा, उसमें क्या लिखा है, यह हम तो नहीं जान पाते। हो सकता है कुछ लोग उस पटल पर हों जो इस भाषा को समझ सकते हैं, पढ़ सकते हैं, उनके लिए लिखा गया हो। लेकिन अगर पटल पर पाँच लोग स्थानीय भाषा वाले हैं और ५० लोग हिन्दी भाषा भाषी हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति का यह नैतिक दायित्व बनता है कि वह हिन्दी भाषा में ही अपनी पोस्ट करे। परंतु वह नहीं करता, अब उसका कोई कुछ कह तो सकता नहीं।

जब आप दक्षिण भारतीय भाषाओं में लिखेंगे तो आपकी भाषाओं को कौन पढ़ेगा? जब आपकी भाषा को कोई और नहीं पढ़ पाएगा तो उस पर समीक्षा क्या होगी? और जब आप ऐसा कुछ हिन्दी भाषा के साथ नहीं कर रहे तो सम्मान-पुरस्कार की बात तो बहुत दूर की है। इसे अपमान अपना मानने लगते हैं। फिर या तो पटल छोड़ देते हैं या वहीं तकरार करने लगते हैं। भाषाई तकरार से भला किसी का नहीं होगा। स्थानीय भाषा का अपना महत्व अपनी जगह है। कुछ अपनी भाषाओं का विस्तार-प्रचार कर रहे हैं जो कहीं से अनुचित नहीं है। पर हिन्दी पटल पर हिन्दी ही लिखी जानी चाहिए।

सोशल मीडिया ने एक सबसे बड़ा काम यह किया है जिससे कलमकारों के बीच की दूरियाँ खत्म होने लगी हैं। कलमकार एक-दूसरे को जानने-समझने लगे हैं। वही कलाकार कुछ लोगों को मिलाकर कुछ गोष्ठियाँ कर लेते हैं, कुछ छोटा-मोटा कार्यक्रम कर लेते हैं जिसे वह 'अखिल भारतीय साहित्य कार्यक्रम' भी कह देते हैं। कहते हैं किसी से भी

अगर पूछा जाए कि तुम्हारे पास समय है? तो वह व्यक्ति कहता है कोई समय नहीं है, वह समय निकालता है। लेकिन अगर आप धरातल पर देखेंगे तो अच्छे-अच्छे कालोनियों में दिन में लोग खाली आपको नजर आएंगे। वे या तो गप्पे लड़ा रहे होंगे और आनंद लेते हुए जुआ भी खेलते जाएंगे। यह सब होते हुए भी व्हाट्सएप और फेसबुक पर हिन्दी दूर-दूर तक जा रही है, पूरे हिंदुस्तान के लोग आपको पढ़ रहे हैं। आपकी हिंदुस्तान में एक पहचान बन रही है। सोशल मीडिया ने नागरिकों की झिझक को खत्म कर दिया। वैसे तो हिंदी भाषा देश के ७०% भागों में बोली जाती है। दिन-प्रतिदिन हिन्दी भाषा भाषी लोगों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। सोशल मीडिया ने इस बार भारत में जो चुनाव हुए, उसमें भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोगों को चुनाव के प्रति जागरुक किया। सोशल मीडिया लोगों को जोड़ने के लिए बना है, लोगों को तोड़ने के लिए नहीं। आज के अखबार में दिया गया है कि चुनाव से जुड़े बहुत सारे फेक न्यूज़ और आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए पोस्ट भी पाए गए।

1. सोशल मीडिया का सबसे बड़ा दोष क्या है?

सोशल मीडिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है, होना भी चाहिए। लेकिन सोशल मीडिया में जिस तरह से सम्मान और पुरस्कार का एक नया चलन चल पड़ा है, किसी के कहने पर किसी को सम्मानित किया जाने लगा है। कुल मिलाकर हम कहते हैं सोशल मीडिया अपने बाल्यकाल में है। जरूरी है व्हाट्सएप और फेसबुक के एडमिन इस बात पर ज्यादा ध्यान दें। अगर वास्तव में उनकी कोई रुचि नहीं है तो उसको उन्हें बंद कर देना चाहिए, क्योंकि बिना मालिक का घर जी का जंजाल बन जाता है। जो लोग अच्छा कर रहे हैं उनके साथ जुड़ना और हिन्दी का विकास करना अपना नैतिक कर्तव्य मानकर, उसमें अपना बहुमूल्य योगदान देना; यह कार्य सभी करने लगें तो हिन्दी भाषा का विकास और भी तेज गति से होने लगेगा। जिस दिन भारत के शत-प्रतिशत लोग हिन्दी भाषा में काम करने लगेंगे, उस दिन पूरा विश्व हिन्दी भाषा के महत्व को जान जाएगा और पूरे विश्व का एक हिस्सा हिन्दी को अपना लेगा।

2. सोशल मीडिया हिन्दी को कैसे बढ़ावा दे रहा है:

- व्यापक पहुँच: फेसबुक, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर हिन्दी को दुनिया भर के लोगों तक पहुँचा रहे हैं।

- युवाओं की भागीदारी: युवा पीढ़ी इन प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी का खुलकर और गर्व से इस्तेमाल कर रही है, जिससे भाषा का प्रचलन बढ़ रहा है।
- अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम: सोशल मीडिया बिना किसी रोक-टोक के लोगों को अपनी बात रखने का मौका देता है, जिससे हिन्दी में सार्वजनिक अभिव्यक्ति बढ़ी है।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान: भारतीय फिल्में, संगीत और कंटेंट (जैसे यूट्यूब वीडियो) हिन्दी को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बना रहे हैं, जिससे गैर-हिन्दी भाषी लोग भी इसे समझने लगे हैं।
- हैशटैग का प्रयोग: हैशटैग जैसे '#विश्व_हिन्दी_दिवस' के जरिए लोग हिन्दी से जुड़े संदेशों और पोस्ट्स को आसानी से ढूंढ और साझा कर पा रहे हैं, जिससे एक बड़ा नेटवर्क बन रहा है।
- डायस्पोरा का जुड़ाव: विदेशों में बसे भारतीय अपनों से जुड़ने और संस्कृति साझा करने के लिए सोशल मीडिया पर हिन्दी का उपयोग कर रहे हैं।

3. चुनौतियाँ और भविष्य:

- शुरुआत में 'हिंग्लिश' (हिन्दी और अंग्रेजी का मिश्रण) का चलन था, लेकिन अब शुद्ध हिन्दी का प्रयोग भी बढ़ रहा है।
- हिन्दी के लिए एक मंच तैयार हो रहा है जहाँ रचनाकार सीधे पाठकों तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं, जिससे साहित्य और भाषा का विकास हो रहा है।
- भारत सरकार और विभिन्न संस्थाएँ भी 'वर्ल्ड हिन्दी डे' जैसे आयोजनों के जरिए इसे बढ़ावा दे रही हैं, जिससे इसका महत्व और बढ़ रहा है।

कुल मिलाकर, सोशल मीडिया हिन्दी को एक नया आयाम दे रहा है और इसे विश्व स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सोशल मीडिया में हिन्दी के प्रभाव पर अध्ययन:

वर्तमान में अपने विचारों या भावों को आमजन तक पहुंचाने में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जो इंटरनेट के माध्यम से एक व्यक्ति को दूसरों से जोड़ देता

है। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे विश्व को सूत्रता में बाँधता है। यह विश्व का सुगम एवं सस्ता माध्यम है जो तीव्र गति से सूचनाओं का आदान-प्रदान करके हर क्षेत्र की घटनाओं को आमजन तक पहुंचाता है। इस माध्यम के द्वारा किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। कुछ समय पहले जब सोशल मीडिया का अवतार हुआ तब ज्यादातर लोग अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते थे, उस समय हिन्दी भाषी लोग सोशल मीडिया का सहज उपयोग नहीं कर पाते थे। आज सोशल मीडिया पर हिन्दी का प्रयोग लोगों के लिए अलग पहचान दिलाने में आकर्षक साबित हुआ है। आज विभिन्न कंपनियाँ हिन्दी भाषा में अपना विज्ञापन तथा सूचनाओं का प्रचार-प्रसार करती हैं, क्योंकि उनका मानना है कि आज हिन्दी भाषा का विस्तृत फलक है और अगर उन्हें भी अपनी सूचनाओं को बहुसंख्यक लोगों तक पहुंचाना है तो वही भाषा चुननी होगी, जिसके पाठक वर्ग अधिक हों तथा ग्राहक सहज और पारिवाकिता महसूस करें।

सोशल मीडिया, हिन्दी भाषा एवं संचार प्रभाव:

- शब्द संक्षेप का इस्तेमाल: सोशल मीडिया पर विभिन्न संदर्भों में संचार करने के दौरान बहुत बड़ी संख्या में विविध प्रकार के शब्द संक्षेप भी इस्तेमाल किए जाते हैं। हिन्दी भाषा बोलने वाले लोग भी ऐसे संक्षेप इस्तेमाल करके संवाद करने में सहूलियत महसूस कर रहे हैं और इससे संवाद करने की गति में बढ़ोत्तरी हो रही है और एक व्यक्ति कई स्तरों पर जुड़ सकते हैं।

- सोशल मीडिया पर भाषा अनुवाद: सोशल मीडिया पर संचार के दौरान अनुवाद करने की एक बहुत बड़ी सुविधा उपलब्ध हो गई है। इसने भिन्न-भिन्न भाषाओं के व्यक्तियों के बीच में सजीव तरीके से तत्काल टेक्स्ट आदि रूपों में संवाद करने की सुविधा उपलब्ध करा दी है और अब दो भिन्न-भिन्न भाषाओं की दीवार नहीं खड़ी होती है। व्यापार और मार्केटिंग की दुनिया में इस प्रकार के अनुवाद के संदर्भ में काफी बातें बतायी गयी हैं।

- सोशल मीडिया पर भाषा की शुद्धता: सोशल मीडिया पर भाषा लिखने की सुविधा दी गयी है। इससे संवाद के दौरान भाषा की शुद्धता को बनाए रखने के लिए भी मदद मिलती है। अतः संवाद में कोई व्यक्ति जब किसी शब्द को गलत तरीके से लिखता अथवा बोलता है तो फिर उसे शुद्ध करने की पहल सोशल मीडिया में

उपलब्ध टूल द्वारा की जाती है।

- भाषा एवं संचार पर नकारात्मक प्रभाव: एक तरफ जहां सोशल मीडिया का भाषा एवं संचार पर कई प्रकार से सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, वहीं पर इसका भाषा पर बहुत नकारात्मक प्रभाव भी कई तरीके से पड़ रहा है। सोशल मीडिया की भाषा पर यह नकारात्मक प्रभाव कहीं अधिक दिखने लगा है।
- लोगों के बीच वास्तविक संवाद की कमी: सोशल मीडिया ने आभासी दुनिया में लोगों के बीच संवाद करने की सुविधा उत्पन्न कर दी है। वे दूर रहकर भी सोशल मीडिया डिजिटल तकनीक के माध्यम से संवाद कर रहे हैं। इसलिए लोगों में वास्तविक मुलाकात कम होती है। सोशल मीडिया पर संवाद करने के कारण से लोगों को एकाग्रचित होकर कार्य करने में भी बाधा पहुंच रही है और लोग व्यक्तिगत स्तर पर होकर इतना अधिक मात्रा में संवाद कर रहे हैं कि वास्तविक कार्य के संदर्भ में किए जाने वाले संवाद प्रभावित हो रहे हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार से हम देखते हैं कि सोशल मीडिया ने हिन्दी भाषा एवं उसे प्रस्तुत करने की संचार प्रक्रिया के स्वरूप पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरीके से काफी अधिक प्रभाव डाला है। कुछ वर्ष पूर्व तक हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में जो बदलाव बहुत ही अल्प समय में आधारभूत ढंग से हुए हैं, उसने परिवर्तन किया है। इसी के साथ नए-नए तरीके से संचार के साधन जैसे एप आदि भी विकसित होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर अभी भाषा को और प्रभावी बनाने में अन्य प्रकार के टूल की खोज एवं इस्तेमाल किया जाएगा। इससे अन्य प्रकार से भी प्रभाव पड़ेंगे और भाषा में परिवर्तन होगा। यदि व्यक्ति समाज में अपनी एक सक्रिय भूमिका निभाते रहना चाहता है तो यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया पर लोगों के बीच में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के नए-नए तौर-तरीके से अच्छे ढंग से परिचित हो और उसका सही तरीके से इस्तेमाल करने की कुशलता भी सीखें। इसी के साथ उसके नकारात्मक पक्षों को कम करने के लिए भी प्रयास करें।